मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

(ग्रामीण कृषि मौसम सेवा)

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर– 342003

दिनांकः 30 जनवरी 2015

जोधपुर

जिले के लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग, क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केन्द्र, जयपुर से प्राप्त मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

मौसमी तत्व / दिनांक	30-01-14	31-01-14	01-02-15	02-02-15	03-02-15
वर्षा (मि.मी.)	0	0	0	0	1
अधिकतम तापमान (°सेल्सियस)	24	25	25	24	24
न्यूनतम तापमान (°सेल्सियस)	8	9	9	8	8
बादलों की स्थिति (ओक्टा)	0	0	1	2	3
सापेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत) सुबह	51	58	68	78	92
सापेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत) शाम	12	18	22	24	26
हवा की गति (कि.मी/घंटा)	6	8	8	8	12
हवा की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पश्चिम	उत्तर–उत्तर–पूर्व

मौसम पूर्वानुमान के आधार पर कृषि परामर्श सेवा, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा इस जिले के किसानों को सलाहः

गेहूँ की फसल में चतुर्थ सिंचाई 80 से 85 दिन की अवस्था पर अवश्य करें व फसल में फुटान के समय 0.5 ग्राम थायोयूरिया प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

सरसों की फसल में दाना बनने की अवस्था पर सिंचाई करें।

कुष्माण्ड कुल की ग्रीष्मकालीन सब्जियों जैसे तुरई, खीरा, कद्दू, करेला, ककड़ी एवं तरबूज की बुवाई हेतु खेत की जुताई कर तैयार करें तथा आवश्यक आदानों जैसे बीज, रसायन एवं उर्वरक की अग्रिम व्यवस्था करें।

पशुओं के चारे में बदलाव धीरे–धीरे करें। पशुओं को निर्धारित मात्रा में दाना तथा मिनरल मिक्स्चर अवश्य दें। भेड़ों व बकरियों में फड़किया व माता रोग का टीका लगवाऐं।